सदीनामा

सोच में इज़ाफा

www.sadinama.in

ISSN : 2454-2121

वर्ष-19 ❍ अंक-7 ❍1 से 31 मई 2019❍ पृष्ठ-28 ❍ R.N.I. No. WBHIND/2000/1974 ❍मूल्य - 10 रूपये

भारतीय लोकतंत्र का एक अविस्मरणीय क्षण

सत्रहवीं लोकसभा के लिए आम चुनाव

सम्पादकीय

चुनावी संग्राम और अखबार की सदस्यता

जब यह अंक आपके हाथों होगा लोकसभा चुनाव का चौथा चरण चल रहा होगा। आधे के करीब सीटों पर चुनाव लड़ रहे लोगों का भाग्य मतपेटियों में बंद हो चुका है। पूरे देश में एक अलग तरह की लम्बी चुप्पी है। मुझे स्वर्गीय अटल बिहारी जी के प्रधानमंत्री रहते समय होने वाले चुनाव की याद जोरों से आ रही है। प्रमोद महाजन के ''साइनिंग इंडिया'' प्रचार से पूरे देश में धुआंधार विज्ञापन मचा हुआ था। श्रीमती सोनिया गाँधी पूरे देश में प्रचार कर रही थी कोई महागठबंधन नहीं था, साझेदारी जरूर थी। चुनाव के बाद भाजपा हार गयी और अलगे दस वर्षों तक देश ने यूपीए की सरकार देखी। बाद के वर्षों में अन्ना का आन्दोलन देखा और भ्रष्टाचार के खिलाफ सड़कों पर आक्रोश। जो आन्दोलन के साथ नहीं उसे भ्रष्टाचारी कहा जाने लगा। कालेधन को लाने की बातें उठने लगीं, हुआ कुछ नहीं। अब यह चुनाव विचित्र स्थिति में पहुँच गया है। बंगाल में स्थितियाँ बदलती दिख रही हैं। बंगाल के कारखानें बड़ी संख्या में बंद हुए हैं। हर मुहल्ले में बने क्लबों का तेजी से राजनीतिकरण हुआ है। जो क्लब सत्ता के खिलाफ आन्दोलनों की जन्मभूमि हुआ करते थे वे आज सरकारी सहायता से चल रहे हैं।

देश में महा गठबंधन है। कार्यकर्ताओं में आपसी समझदारी गड़बड़ा रही है। कैडर आधारित पार्टियों की बात अलग है वे नेताओं के फैसलों को मानती हैं, कभी बंगाल में धुर-विरोधी पार्टियों कांग्रेस और वामपंथियों ने मिलकर चुनाव लड़ा कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने वामपंथियों को वोट नहीं दिया और बाद में वह गठबंधन टूट गया। जहाँ महागठबंधन के साथ कांग्रेस नहीं है वहाँ कौन वोट कटवा है बोलना मुश्किल है। लोकतंत्र में पार्टियों के लिए जमीनी कार्यकर्ताओं बनाने वाले लोग हाशिये पर हैं। सपा में जो स्थिति मास्टर शिवपाल यादव की थी वही बंगाल में तृमकां के मुकुल राय की है। आज शिवपाल ने नयी पार्टी बनाकर चुनाव का रास्ता लिया है। वही मुकुल राय त्रिपुरा में भाजपा को जिता कर बंगाल में तृणमूल कांग्रेस को हराना चाहते हैं।

हिन्दी साहित्यिक पत्रिका निकालना आपको विचित्र अनुभवों से भर देगा। पिछले महीने हमारे यहाँ एक विज्ञापन छपा। विज्ञापन दाता ने मुझसे मिलने की इच्छा जाहिर की। मैं मैट्रोके चांदनी चौक स्टेशन पर था वहाँ से मुझे 'कलकत्ता गर्ल्स कॉलेज' जाना था। मैंने कहा मैं नहीं पहुँच पाऊँगा, वे बोले आप कहाँ है? मैंने कहा चांदनी चौक मैट्रो के पास। मुझे अपने अखबार के काम से थोड़ी देर रुकना था। थोड़ी देर में देखा एक सज्जन ने अचानक पैर छुए और बोले मेरे मित्र आपसे मिलना चाहते हैं, मुझे बहुत शर्मिंदगी महसूस हुयी जब इन्होंने मेरे पैर हुए। मुझे लगा कि इनकी बात नहीं काटनी चाहिए। मैं उनके साथ चल पड़ा। उनके मित्र की ऑफिस में। उनके मित्र मेरे वहीं विज्ञापनदाता थे जिनका विज्ञापन छपा था। बहुत सी बातें हुईं, उन्होंने मुझसे मेरे सम्पर्कों के बारे में पूछा, सदस्यता ली और मुझसे अपने चुनाव प्रचार के बारे में सलाह ली। तय हुआ वे इस माह भी विज्ञापन देंगे और कुछ प्रतियाँ खरीदेंगे। विज्ञापन का मैटर जल्दी भेज देंगे। चौथे दिन पैर छू कर ले जाने वाले सज्जन का फोन आया। मुझे आपकी पत्रिका की सदस्यता नहीं लेनी और लम्बी बातचीत के बाद हमने उनका पैसा ब्याज सहित लौटा देने का संकल्प लिया है।

इन सदस्यों का मुख्य काम रक्त-दान कराना। खेल-कूद कराना और सरकार की योजनाओं को मोहल्ले में लागू कराना रह गया है। बामपंथी सरकार के चौतीस वर्षों में इन क्लबों में आधकार नेता लोगों को नियंत्रित करने का काम करते थे। ट्रिपल एम का फार्मूला अब यहाँ काम नहीं कर रहा है। बुद्धिजीवी तबका किसी भी राजनैतिक दल में निर्णायक स्थिति में नहीं है। जनता को बड़े बदलाव की जरूरत महसूस हो रही है। कोई एक जुमला 'सपा नहीं तो सफा' या मायावती के समय गुंडों का दरबदर होना सब बातें इतिहास भर हैं। एक बहुत बड़े आन्दोलन की जरूरत है।

जीतेन्द्र जितांशु
jjitanshu@yahoo.com

पत्रिका का ताना-बाना

संपादक

जीतेन्द्र जितांशु

9231845289

सम्पादकीय सलाहकार

यदुनाथ सेउटा

उप-सम्पादक

तितिक्षा

मिनाक्षी सांगानेरिया

संरक्षक मंडल :

आरती चक्रवर्ती

एच॰ विश्ववाणी

शिवेन्द्र मिश्र

राजेन्द्र कुमार रुइयां (अमेरिका)

डीटीपी, लेआउट तथा भूल-सुधार

राजेश्वर राय

रमेश कुमार कुम्हार

मारिया शमीम

कवर पेज कलर का चुनाव :

उषा सिंह, दिल्ली

सभी अवैतनिक हैं

पत्राचार का पता :

संपादक - सदीनामा

Purboyan, GA

38E, Prince Bakhtiar Sah Road

Kolkata - 700 033

West Bengal

E-Mail : sadinama2000@gmail.com

ढाई आखर प्रेम का

ढाई आखर प्रेम का जीवन का आधार।
ऐसा प्यारा शब्द है जिस से छलके प्यार।।1।।

ढाई आखर प्रेम का है वो सुन्दर रूप।
फूटे जिसकी कोख से प्यार की कोमल धूप।।2।।

ढाई आखर प्रेम का है मनमोहन योग।
जिससे पैदा होता है आपस में संजोग।।3।।

ढाई आखर प्रेम का है मानव की शान।
जिससे होता है प्राप्त इन्साँ को सम्मान।।4।।

ढाई आखर प्रेम का छेड़े मन के तार।
जिसकी लै पे झूम उठे सार जग संसार।।5।।

ढाई आखर प्रेम का बन के सुर संगीत।
गीतों में ढक जाऐ तो दिल लेता है जीत।।6।।

ढाई आखर प्रेम का पढ़ ले जो इन्सान।
जीवन पथ उसके लिए हो जाऐ आसान।।7।।

ढाई आखर प्रेम का ढाई आखर प्रीत।
दोनों का अर्थ एक है दोनों को एक रीत।।8।।

बात पते की कह गए, सूफी संत कबीर।
जीवन अधूरा प्यार बिन राजा हो या फकीर।।9।।

हलीम साबिर, 9163052340

ADVERTISEMENT RATE TARIFF

Advertisement Space	Rate
Back Cover Page (Colour)	: 12,000/-
Back Cover Page (Black & White)	: 10,000/-
Inside Cover Page	: 8,000/-
Black & White Advertisements (Half Page)	: 6,000/-
Coloured Advertisements (1/4 Page)	: 5,000/-
Black & White Advertisements (1/4 Page)	: 2,500/-
Bottom Strips (15cm × 5cm)	: 1,000/-
Front Cover Page (Only colour)	: 25,000/-

www.sadinama.in

टैंक युद्ध

खेमकरण की कहानी

खेमकरन एक भारतीय गाँव है जो 5 किलो मीटर इन्डो-पार्क सीमा से और पाकिस्तानी शहर कसुर से 8 किलो मीटर के दायरे में स्थित हैं। पाकिस्तान की सेना ने 8 सितम्बर 1965 की रात को अपनी सेना की एक टुकड़ी को भारतीय क्षेत्र कसुर में तैनात कर दिया और खेमकरन गाँव पर अपना अधिकार जमा लिया।

हाँ, पाकिस्तान ने कुछ दिनों के लिए खेम-करन पर अपना अधिकार जमाया था। लेकिन यह कहानी नहीं है, इन तीन दिनों में जो घटा हैं उसकी कहानी यह है।

जब पाकिस्तान की नीति आक्रामक हुई, भारत ने विरोध किया, लैफ्टिनेंट जनरल गुरबख्स सिंह ने विरोध किया। पाकिस्तान की पहली सेना टुकड़ी को उसके उग्र पैटन टैंक के पर बहुत गर्व था। अत्यधिक रात्री-दृष्टि क्षमता के साथ अमेरिका से हाल ही में इसे पाकिस्तान ने प्राप्त किया था। कोई भी भारतीय टैंक पैटन के समकक्ष नहीं था। सेंचुरियन टैंक भी नहीं।

पाकिस्तान की युद्ध नीतियों के तहत, खेम करन घटना हरिक और बियास नदी जोड़ने के लिए घटित की गयी। यह पाकिस्तान का पहला कदम था। पाकिस्तान, पानीपत की चौथी लड़ाई के लिए तैयार थे, जिसे वे जीतना चाहते थे। जनरल अयूब खान ने फौजी अफसरों को दिल्ली जिमखाना में रात्रि के भोजन के लिए बुलाया और हौसला बढ़ाया।

यह घटना दो स्तरों पर प्लान की गयी। 1 स्तर में 11 सेना टुकड़ी - फस्ट लाईट डी प्लस के द्वारा खेम करन के क्षेत्र करना था अपना अधिपत्य स्थापित करन के लिए स्थापित किया करना था। पार्ट-2 स्तर, एक सेना की टुकड़ी को तीन दलों में बाँट दिया। पहला में 4 सेना बिग्रेड को दो सेना दल के साथ रखा गया और एक मैकानाजण्ड बटालियन को फतेहाबाद के साथ पास होकर सोवरओन शाखा कैनल में भेजा गया, व्यास के पुलों को अधिकार में करने के लिए। दूसरी धुरी में 3 सेना बिग्रेड को दो सेना रेजिमेंट के साथ और एक नवजात वटालियन को खेम-करन-भिक्किवंड तल के साथ तरन ने कसुर शाखा कैनल पर धावा बोला । जंदियाला गुरु को अधिकार करके ग्रेंड ट्रंक रोड से अलग करने के लिए।

'इन द लाइन ऑफ ड्यूटी' नायक अपनी किताब में जनरल हरबकश ने लिखा: 9 सितम्बर की रात को,सेना दल का मुख्य ने मुझे आदेश दिया। पूरी आर्मी को पाकिस्तान की सेना से सुरक्षा दिलाने की उसकी सलाह थी। पंजाब के कुछ क्षेत्रों को जिसमें अमृतसर और गुरुदासपुर को बचाना था अन्यथा यह चीन की हार से भी खराब होगी।

जनरल हरबख्स सिंह (जी. ओ. सी. इन- चीफ, पश्चिमी कमाण्ड) ने आदेश का पालन करने से मना कर दिया।

आज इस टैंक युद्ध को इतिहास में एक मिसाल के तौर पर पढ़ाया जाता है। इस युद्ध की कमान इस प्रकार थी -

4थी माउंटेन डिविजन (मेजर जनरल गुरुबकश सिंह)

2दूसरी स्वतंत्र आर्मड् ब्रिगेड (बि.टी.के थियोगराज)

7वीं माउंटेन ब्रिगेड (ब्रि.सिद्धू)

62वीं माउंटेन ब्रिग्रेड (एच.गहलौत)

भारतीय फौज ने नजदीक के नाले का पानी पास के खेतों में खोल दिया जो सेक्टर के दक्षिण और दक्षिण पश्चिम की ओर था। अत: पाकिस्तानी टैंकों के हमले की जगह ज्यादा नहीं बची थी। पाकिस्तानी टैंक इस कीचड़ में फँस गये। कुछ टैंक पास के गन्ने के खेतों में घुसे जिनसे उनकी गति घट गयी और अपने लक्ष्य से भटक गये। इनके फँसने के बाद तुरंत इन पर टैंक फायरिंग शुरु हो गयी और पाकिस्तानी ये युद्ध हार गये।

संत कबीर साहब की वाणी

संत कबीर जब हमें आध्यात्मिकता का अर्थ समझातें हैं, जो अपनी आध्यात्मिकता को एक शब्द में बोलना चाहे तो वे हैं 'गुरु' वो शब्द है 'मुर्शीद' या जिसे हम अंग्रेजी में मास्टर कहते हैं, आध्यात्मिकता की दो विचारधाराएँ हैं, एक स्कूल कहती हैं कि, किसी ने प्रभु को उनकी सच्ची स्थिति में देखा नहीं है, और न इन्हें सच्ची अवस्था में देखा जा सकता है।

दूसरे स्कूल की विचार कहती है कि ''नानक का पाती साहू दीसे जाहिरा'' कि प्रभु को हाजरा हुजूर देखो, एक सूफी संत ने कहा है कि, प्रभु को हाजरा हजूर देखा है कुछ महात्माओं ने तो बहुत सुंदर तरीके से सच्चाई पेश की है, लेकिन जब भक्ति की बात आती है तो संत महात्मा खुद की बात बताते हैं, क्राइस्ट ने भी कहा है कि, प्रभु को नजर के सामने देखो।

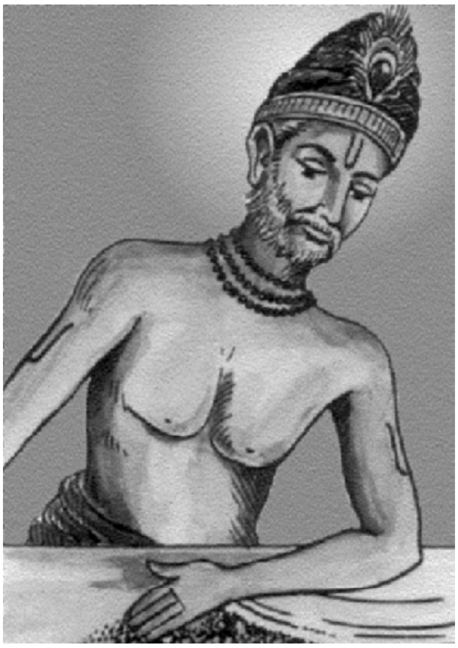

कबीर बताते हैं कि, गुरु जब शरीर रूप में हैं तो हमें नाम दान की संपत्ति देते हैं और हमें ज्योति और श्रुति का अनुभव कराते हैं, इसलिए हमें देह अभ्यास से ऊपर उठना चाहिए, दिल में चाँद, तारे और सूर्य की रोशनी से प्रभु के दिव्य स्वरूप का दर्शन करना होगा ये दिव्य स्वरूप को हम गुरुदेव के नाम से बुलाते हैं, ये स्वरूप में इतना आकर्षण होता है कि, हम इसमें लीन हो जाते हैं, फिर धीरे-धीरे गुरुदेव हमें सूक्ष्म और कारण देशों से परिचय कराते महा चेतना के देश में ले जाते हैं, और हमें त्रिगुणातित कर देते हैं, वो सच में अमृत धारा है, हमारी आत्मा वो अमृत में स्नान करते हैं जब वो अमृत पीते हैं तो आत्मा के सभी अवगुण निकल जाते हैं, और पचीस प्रकृति, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अभिमान और मायारूपी तमाम तरह के पर्दे खुले जाते हैं, इस देश में हम सभी उन्हें सद्गुरु के नाम से पुकारते हैं, गुरुवाणी में गुरु शब्द स्वरूप बन जाते हैं, गुरु नानक भी कहते हैं कि, गुरु शब्द रूपी है, यही बात कबीर साहब भी कहते हैं, ये मार्ग पर चलके हम शब्दरूपी स्वरूप गुरु को पा सकते हैं, उसके बाद गुरु हमें हमारी आत्मा को आध्यात्मिक मंडल में ले जाते हैं, और खुद में लिन कर देते हैं।

''गुरु गोविंद दोनो खड़े, काके लागू पाय,

बलिहारी गुरु आपकी, जिन गोविन्द दियो बताय।''

ये तो मान देने की बात है, प्रभु जी तो सबसे ऊँचे स्थान पर है, लेकिन इंसान तो वही बोलता है कि जो उसने देखा है, संतों द्वारा खुद की बात की गई है, सहजो बाई ने ये बात इस तरह पेश की है कि, प्रभु हमें चौरासी लाख योनि में डाल दिया है, जबसे हमने जन्म लिया तबसे चौरासी लाख योनि में घूम रहे हैं, अभी तक परमात्मा के साथ मिलन नहीं हुआ है और हकीकत में आत्मा और परमात्मा हमारे जीवन में का लक्ष्य है, ये सद्गुर की दया ही है जो हमें चौरासी योनि के चक्कर में से बचाकर आत्मा को परमात्मा के साथ भेंट कराती हैं, इसलिए गुरु को मैं सबसे पहले नमस्कार करती हूँ, प्रभु ने पाँच डाकू हमारी पीछे लगा दिए हैं, काम, क्रोध, मोह, माया और अभिमान हमारे अंदर बहते अमृत रस को वो डाकू पी जा रहे हैं।

कबीर कहते हैं कि गुरु के समान और कोई दानी नहीं है, कबीर साहब हमें समझा रहे है कि समय के महात्मा स्वयं शाश्वत होते हैं,अमर होते हैं, और हमें भी नाम दान देकर अमर बना देते हैं, सदा के लिए जीवन दे देते हैं, सद्गुरु हमें खुद का जीवन दान देते हैं, वो हमें उनकी खुद की दया देते हैं पूर्ण सद्गुरु

विचारधारा

हमें ग्यान का दान देते हैं, गुरु ने हमारे काम, क्रोध, मोह, लोभ और अभिमान को नाथ लेते हैं।

कबीर जी बता रहें हैं कि, जल्द से जल्द जो बात कहना हम चाहते हैं वो बात कर देना चाहिए, समय बहुत तेजी से आगे निकल रहा है और समय और लहर कभी किसी की राह नहीं देखते, कबीर बताते हैं कि ये जिन्दगी का कोई भरोसा नहीं है, इस के बारे में एक कवि ने कहा है कि, एक प्रियतमा को बहुत लोग चाहने वाले थे, एक प्रेमी एक बार प्रियतमा के पास आया और कहा कि, तू तो मेरी जान हैं, तब प्रियतमा बहुत खुश हो गई, फिर दूसरा प्रेमी आया और उनसे कहा कि, मैं तुम्हें बहुत चाहता हूँ, तब प्रेमिका ने कहा कि, पहले प्रेमी ने तो ऐसा कहा था कि मैं उसकी जान हूँ, उस पर एक दूसरा आशिक ने थोड़ा हास्य किया, और कहा कि, देह का क्या भरोसा है, अभी हम एक साथ बात कर रहे हैं और क्या पता मेरी जिह्वा बंद हो जाय, जीवन अनमोल है, जीवन की हर क्षण हर घड़ी बहुत अमूल्य है।

कबीर जी कहते हैं कि, जबसे ये संसार बना है, तबसे हमारी आत्मा परमात्मा से अलग हो गई है, और चौरासी लाख योनियों में फेरे ले रही है, महापुरुष प्रभु के रूप में होते हैं और वो प्रभुजी के पास से आध्यात्मिकता का खजाना ले आते हैं, फिर तड़पती आत्मा को वापस ले जाकर प्रभु के साथ मिला देते हैं, गुरु हमें उनके चरणों में ले जाकर हमारा आलस, दाग दूर करते हैं, हमें नाम दान देते हैं, हमें गुरुमुख बनाते हैं, हमें प्रभु प्राप्ति के लिए मार्ग बताते हैं, हमारे में प्रकाश डालते हैं। और इस प्रकाश से हमारा जीवन उन्नत बनाते हैं।

कबीर साहब हमें समझाते हैं कि, हमें हर समय अभ्यास करना चाहिए, और प्रभु का स्मरण करना चाहिए, अभ्यास वो है कि प्रभु का स्मरण करते हुए प्रभु में लीन होकर उसका ध्यान धरना चाहिए, इसी बात के साथ हम ऐसे पवित्र संत कबीर साहब के चरणों में वंदन करते हैं।

डॉ॰ गुलाब चंद पटेल
मो॰ - 8849794377
कवि, लेखक, अनुवादक
नशा मुक्ति अभियान प्रणेता
ब्रेस्ट कैंसर अवेर्नेस्स कार्यक्रम

अंजनी पुत्र सेना का पंचम साल बेमिसाल

अंजनि पुत्र सेना द्वारा 15.4.2019 राम नवमी के पावन अवसर पर विगत 4 वर्ष की तरह ही इस वर्ष भी भव्य ऐतिहासिक श्री राम नवमी शोभायात्रा का आयोजन किया गया।

पंचम साल बेमिसाल के उद्देश्य से विगत 3 महीनों की अथक परिश्रम का प्रतिफल फल आज हावड़ा की मुख्य सड़क जी. टी. रोड पर देखने को मिला।

नरसिंह मन्दिर अवनिमाल के समीप संत समाज की अविभूति का एक साथ सानिध्य सन्त समागम का दृश्य अविस्मरणीय था।

शंकरमठ से स्वामी श्रीप्रणवानंद महाराज एवं बेलुड़मठ के स्वामी श्री सोमानन्द जी महाराज तथा गौड़ीय मिसन से आये महाराज इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे।

पूजा अर्चना के साथ यात्रा का शुभारम्भ हुआ। शोभायात्रा में हरि किर्तन करते गौड़ीय मिशन के लोग वातावरण को भक्तिमय बना रहे थे। मातृशक्ति शंख वाहिनी के रूप में सम्पूर्ण यात्रा मार्ग पर शंखनाद करती रही।

झांकियों में श्रीराम माता सीता लखन एवं हनुमान सहित भोले नाथ शिव शंकर सहित वीरांगना लक्ष्मी बाई एवं हिन्दू सम्राट बने अंजनि पुत्र सैनिक मनमुग्ध कर रहे थे। इस शोभायात्रा का सबसे शानदार देखने लायक दृश्य हिन्दू हृदय महेश बिनानी का बिना चप्पल के नंगे पैरों इस कड़ी धूप में चलना और रामायण को अपने माथे पर रख कर रामायण का मान बढ़ाना आज के युग में इतना करना केवल देश, धर्म के लिए। सायेद ही कोई सोचता है या कर पाता है। सही में यह दृश्य प्रसंसनीय है।

साथ में लाल राठी, सुरेन्द्र बर्मा और भी कार्यकर्ता शामिल थे। इसका मुख्य आकर्षण था जनता द्वारा जय श्री राम का जय घोष और जगह जगह लोगों द्वारा सरबत वितरण के शिविर बहुत संस्था ने इस कार्य मैं कार्यक्रम को सफल करने मैं सहयोग दिया। पूरे काजी पाड़ा जय श्री राम, की जय श्री राम के जय घोष से गूंज उठा कार्यकर्ताओं का उत्साह बहुत जोरदार था। इस कार्य में महिलाओं का योगदान सराहनीय था। जय मातृ शक्ति, जय हिन्दुत्व।

रपट : मिनाक्षी सांगानेरिया